



नई दिल्ली। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें ब्रह्माकुमारीज के 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शान्ति शिखर भवन' का उद्घाटन करने के लिए नवा रायपुर छत्तीसगढ़ आने का निमंत्रण देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. महेश भाई, ब्र.कु. नथमल भाई, ब्र.कु. डॉ. लीना बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. आशा दीदी व ब्र.कु. सविता दीदी।



देहरादून-उत्तराखंड। कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सोनिया बहन।



सोनीपत से.15-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रमोद दीदी द्वारा नवनिर्गुण एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट के डिप्टी डायरेक्टर पवन शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट कर स्वागत किया गया एवं सेवाकेन्द्र में आने का निमंत्रण दिया गया। साथ में ब्र.कु. सुनीता बहन उपस्थित रहे।



गया-सिविल लाइंस(बिहार)। गया गांधी मैदान में द्वादश ज्योतिर्लिंग मेले का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए महापौर बिरेन्द्र कुमार, जिला परिषद अध्यक्ष नैना देवी, सीडीपीओ अरुणा कुमारी, बोधगया पूर्व विधायक श्यामदेव पासवान, बौद्ध भिक्षु प्रज्ञादीप जी, प्रमुख समाजसेवी कैलाश डालमिया, डॉ. बॉरेन्द्र प्रसाद, ईटीएच संपादक मदन मोहन मिश्र, व्यवसायी प्रदीप जैन, मितल जी, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी तथा अन्य।



दिल्ली-डेरावल नगर। मेयर डॉ. शैली ओबराय को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा बहन, ब्र.कु. लता बहन एवं ब्र.कु. प्रीत बहन।



बरनाला-पंजाब। डिप्टी कमिश्नर श्रीमति पूनम दीप कौर, आईएएस ऑफिसर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वृज बहन एवं ब्र.कु. सुदर्शन बहन।



दुमका-झारखण्ड। एसएसबी कमाण्डेंट के साथ पौधारोपण करते हुए ब्र.कु. जयमाला व ब्र.कु. रेखा।

जीवन में अति आवश्यक हैं ये दो गुण

जब किन्हीं दो व्यक्तियों में संघर्ष होता है तो उसका मूल कारण प्रायः दोनों में किसी ना किसी दिव्य गुण का अभाव होता है। परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि एक व्यक्ति में अधिक दिव्य गुणों का अभाव होता है और दूसरे में प्रथम की तुलना में केवल एक-आध दिव्य गुण का अभाव होता है। जैसे मान लीजिए कि एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से ईर्ष्या रखता है, दूसरे को मान मिलते हुए देखकर उसके मन में डाह (ईर्ष्या) उत्पन्न होता है। ईर्ष्या से द्वेष, घृणा, कटुता, आक्रोश आदि उत्पन्न हो जाते हैं और इन सबका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति उस दूसरे व्यक्ति से तेज-तर्रार शब्दों में बोलता है, उसकी हर बात से असहमति प्रगट करता है, उससे रुष्ट रहता है, उसे नीचा दिखाने की कोशिश में लगा रहता है और उसकी अगर थोड़ी भी कमी हो तो दूसरों को बढ़ा-चढ़ाकर उसके विषय में बताता है ताकि लोग जो उसका सम्मान करते हैं वो न किया करें। इस प्रकार स्नेह अथवा शुभभावना-शुभकामना रूपी दिव्य गुणों के अभाव के कारण इतने सारे आसुरी लक्षण पैदा हो जाते हैं और उन सबसे संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अपकारी पर भी उपकार की भावना बनाए रखना, निन्दक को भी स्नेह देना, शत्रु को भी गले लगाने की बात बाबा ने कही है। दूसरों की बुराइयों



राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

को न देख, उन द्वारा बुरा व्यवहार होने पर भी उन्हें क्षमा करने, उनके अवगुणों को चित पर न धरने, अपनी अवस्था को न्यारा और प्यारा बनाए रखने और सबको प्यार से अपना बनाने की बात भी बाबा ने समझाई हुई है।

पराकाष्ठा तो नहीं कहेंगे। इस प्रकार विश्लेषण से स्पष्ट है कि संघर्ष की सभी परिस्थितियों में धीरज और सहनशीलता की आवश्यकता होती है। इन दो दिव्य गुणों की हरेक की अपनी सीमा होने के कारण एक समय ऐसा आ पहुंचता है जबकि परिस्थिति विस्फोटक बिन्दु तक पहुँच जाती है।

संघर्ष की ऐसी स्थिति में क्या किया जाये?

शिवबाबा ने तो यही शिक्षा दी है कि हमारी सहनशीलता और धीरज असीम होना चाहिए। हमारी योग की स्थिति एक तो उतनी श्रेष्ठ हो कि हम एक-दूसरे के विकराल दुर्व्यवहार को अपने ही पूर्व कर्मों का हिसाब-किताब मानते हुए उसे वर्षों तक भी सहन करते चले जाएँ और अपनी योग की अव्यक्त अवस्था द्वारा हर्ष और उल्लास में बने रहें। शिवबाबा ने इसके लिए हमें अनेक अनमोल विधियाँ अथवा युक्तियाँ भी बतायी हैं। अपकारी पर भी उपकार की भावना बनाए रखना, निन्दक को भी स्नेह देना, शत्रु को भी गले लगाने की बात बाबा ने कही है। दूसरों की बुराइयों को न देख, उन द्वारा बुरा व्यवहार होने पर भी उन्हें क्षमा करने, उनके अवगुणों को चित पर न धरने, अपनी अवस्था को न्यारा और प्यारा बनाए रखने और सबको प्यार से अपना बनाने की बात भी बाबा ने समझाई हुई है।

अतः हर एक योगाभ्यासी अथवा श्रेष्ठ पुरुषार्थी का पहला कर्तव्य तो यह है कि वह इन अनमोल शिक्षाओं के अनुरूप अपना जीवन बनाते हुए अपने संघर्षों को समाप्त करने का यत्न करे। यदि इससे भी स्थिति में सुधार नहीं होता तो वह उस व्यक्ति से खुले मन से बात कर ले कि वो उससे क्यों रुष्ट है अथवा उसका क्यों विरोध करता है और उसके प्रति अपनी शुभभावना व्यक्त करे। परन्तु यदि वर्षों तक सज्जनतापूर्वक व्यवहार करने, गम्भीर रहने, सहन करते रहने और मन में क्षमाभाव बनाए रखने तथा उपरोक्त रीति से बात कर लेने के बावजूद भी परिस्थिति का हल होते दिखाई नहीं देता और ऐसा लगता है कि अपनी सहनशीलता और धैर्यता अपनी सीमा को पहुंच गए हैं, तो फिर ये तो किसी वरिष्ठ, योगयुक्त, दिव्यगुण सम्पन्न, मधुर भाषी, माननीय व्यक्ति के द्वारा परिस्थिति को सुधारने में सहयोग लेना चाहिए।

तो परिस्थिति उसकी सहनशीलता को पछाड़ रही है, अर्थात् अब तो उसके सहनशीलता रूपी दिव्य गुण में सीमा अथवा हद आने लगी है। इसे यदि 'दिव्य गुण'(सहनशीलता) का अभाव न भी कहा जाए तो भी इसे सहनशीलता की महानतम



मलेरा गांव-पिंडवारा(राज.)। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत सरकारी सेकेंडरी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. यशवंत भाई रेडियो मधुबन हेड, ब्रह्माकुमारीज, शिक्षाविद राजेंद्र जी, आर.जे. रमेश, स्कूल के प्रिंसिपल व स्टाफ, गांव के सरपंच, उपसरपंच तथा विद्यार्थीगण शामिल रहे।